

पर्यावरण संरक्षण

हमारी धरती, हमारी जिम्मेदारी

रूपरेखा

1. प्रस्तावना · 2. पर्यावरण का महत्व · 3. पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार · 4. प्रदूषण के कारण · 5. प्रदूषण के दुष्परिणाम · 6. संरक्षण के उपाय · 7. सरकार और समाज की भूमिका · 8. उपसंहार

धरती हर मनुष्य की ज़रूरत पूरी कर सकती है, पर किसी एक के भी लालच को नहीं।

— प्रचलित सूक्ति

प्रस्तावना

हमारे चारों ओर जो कुछ भी है — हवा, पानी, मिट्टी, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और स्वयं मनुष्य — वह सब मिलकर पर्यावरण बनाते हैं। “पर्यावरण” शब्द “परि” और “आवरण” से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है चारों ओर का घेरा। यही घेरा हमें जीवन देता है, हमारा पोषण करता है और हमारी रक्षा करता है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति में प्रकृति को माता का दर्जा दिया गया है। हमारे पूर्वज नदियों, पर्वतों और वृक्षों की पूजा करते थे, क्योंकि वे जानते थे कि मनुष्य का अस्तित्व प्रकृति के संतुलन पर ही टिका है। आज विकास की तेज़ दौड़ में यह संतुलन बिगड़ने लगा है, इसलिए पर्यावरण संरक्षण हमारे समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गया है।

पर्यावरण का महत्व

पर्यावरण के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। पेड़ हमें प्राणवायु देते हैं, वर्षा लाने में सहायक होते हैं और मिट्टी को बहने से रोकते हैं। नदियाँ खेतों को सींचती हैं और करोड़ों लोगों की प्यास बुझाती हैं। मिट्टी से अन्न उपजता है और वन असंख्य जीव-जंतुओं का घर हैं।

प्रकृति का हर अंग एक-दूसरे से जुड़ा है। यदि जंगल कटते हैं तो वर्षा घटती है, वर्षा घटने से नदियाँ सूखती हैं और नदियों के सूखने से खेती तथा जीवन दोनों संकट में पड़ जाते हैं। इसी कड़ी को समझना पर्यावरण संरक्षण की पहली सीढ़ी है।

पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार

जब प्रकृति के तत्वों में ऐसे पदार्थ मिल जाते हैं जो जीवों के लिए हानिकारक हों, तो उसे प्रदूषण कहते हैं। आज प्रदूषण कई रूपों में हमारे सामने है।

- वायु प्रदूषण — वाहनों, कारखानों और कचरा जलाने से निकलने वाला धुआँ।
- जल प्रदूषण — नदियों में गिरता गंदा पानी, रसायन और प्लास्टिक।
- मृदा प्रदूषण — रासायनिक खादों और कीटनाशकों का अधिक प्रयोग।
- ध्वनि प्रदूषण — लाउडस्पीकर, हॉर्न और मशीनों का शोर।

प्रदूषण के कारण

पर्यावरण बिगड़ने का मुख्य कारण मनुष्य की बढ़ती आवश्यकताएँ और लापरवाही है। बढ़ती जनसंख्या के लिए घर, सड़कें और कारखाने बनाने में जंगल काटे गए। शहरों में वाहनों की संख्या तेज़ी से बढ़ी, पर सार्वजनिक परिवहन उतना नहीं बढ़ा।

हम कचरे को अलग-अलग करने और सही जगह फेंकने की आदत नहीं डाल पाए। एक बार उपयोग होने वाले प्लास्टिक ने इस समस्या को और गंभीर बना दिया है। खेतों में पराली जलाना और त्योहारों पर अत्यधिक पटाखे चलाना भी हवा को जहरीला बनाते हैं।

प्रदूषण के दुष्परिणाम

बिगड़ते पर्यावरण का असर हम हर दिन महसूस करते हैं। शहरों में साँस और आँखों की बीमारियाँ बढ़ रही हैं। गर्मियाँ पहले से अधिक लंबी और तीखी होने लगी हैं, कहीं बाढ़ आती है तो कहीं सूखा पड़ता है। अनेक पशु-पक्षियों की प्रजातियाँ लुप्त होने के कगार पर हैं।

जलवायु में हो रहा परिवर्तन किसानों की फ़सलों, पहाड़ों के ग्लेशियरों और समुद्र तटों पर बसे नगरों के लिए गंभीर खतरा बन गया है। यदि अभी सावधान नहीं हुए तो आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ हवा और पानी भी दुर्लभ हो जाएगा।

संरक्षण के उपाय

पर्यावरण की रक्षा के लिए बड़े-बड़े कानूनों के साथ-साथ हमारे छोटे-छोटे प्रयास भी उतने ही ज़रूरी हैं। कुछ सरल उपाय इस प्रकार हैं :

- हर वर्ष कम से कम एक पेड़ लगाएँ और उसकी देखभाल करें।
- पानी और बिजली की बर्बादी रोकें; अनावश्यक बत्ती-पंखे बंद रखें।
- निकट की दूरी पैदल या साइकिल से तय करें, सार्वजनिक वाहन अपनाएँ।
- कपड़े का थैला साथ रखें और प्लास्टिक का प्रयोग कम करें।
- गीला और सूखा कचरा अलग करें; रसोई के कचरे से खाद बनाएँ।
- वर्षा जल का संचयन करें और सौर ऊर्जा जैसे स्वच्छ स्रोत अपनाएँ।

एक छोटा संकल्प

यदि हर विद्यार्थी अपने जन्मदिन पर एक पौधा लगाए, तो कुछ ही वर्षों में हमारे मोहल्ले हरे-भरे हो सकते हैं।

सरकार और समाज की भूमिका

सरकार ने वनों और वन्य-जीवों की रक्षा, नदियों की सफ़ाई और प्रदूषण नियंत्रण के लिए अनेक कानून और योजनाएँ बनाई हैं। परंतु कोई भी योजना जन-सहयोग के बिना सफल नहीं हो सकती।

विद्यालयों में इको-क्लब, मोहल्लों में स्वच्छता समितियाँ और गाँवों में जल-संरक्षण के सामूहिक प्रयास इस दिशा में अच्छे उदाहरण हैं। मीडिया और सामाजिक संस्थाएँ भी लोगों को जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

उपसंहार

पर्यावरण संरक्षण कोई एक दिन का अभियान नहीं, बल्कि जीवन जीने का तरीका है। प्रकृति ने हमें बहुत कुछ दिया है; अब हमारी बारी है कि हम उसे लौटाएँ। यदि हम आज सचेत हो जाएँ तो अपनी आने वाली पीढ़ियों को एक स्वच्छ, सुंदर और सुरक्षित धरती सौंप सकते हैं।

आइए, हम संकल्प लें कि प्रकृति का उपयोग करेंगे, उसका शोषण नहीं। यही सच्ची देशभक्ति और मानवता है।